❋ 23 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] युद्ध भी 3 प्रकार के होते हैं, फर्स्टक्लास, सेकण्ड क्लास और थर्ड क्लास। कभी-कभी युद्ध न करने वाले भी देखने के लिए आ जाते हैं। वह भी एलाऊ किया जाता है। शायद कुछ रंग लाग जायें और इस सेना में आ जायें क्योंकि दुनिया को यह पता नहीं है कि तुम महाराथी योद्धे हो।

2] परन्तु तुम्हारे हाथ में हथियार आदि तो कुछ भी नहीं है। तुम्हारे हाथ में हथियार आदि शोभेंगे भी नहीं। परन्तु बाप समझाते हैं ना– ज्ञान तलवार, ज्ञान कटारी। तो उन्होंने फिर स्थूल में समझ लिया है। तुम बच्चों को बाप ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र देते हैं, इसमें हिंसा की बात ही नहीं। परन्तु यह समझते नहीं है। देवियों को स्थूल हथियार आदि दे दिये हैं। उनको भी हिंसक बना दिया है। यह है बिल्कुल बेसमझी।

3] पहले-पहले शुरू में तुम पार्ट बजाने आते हो। वह है स्वीट साइलेन्स होम। मनुष्य शान्ति के लिए कितना हैरान होते हैं। यह नहीं समझते कि हम शान्तिधाम में थे फिर वहाँ से आये ही हो पार्ट बजाने। पाटू पूरा हुआ फिर हम जहाँ से आये हैं वहाँ जरूर जायेंगे। सभी शान्तिधाम से आते हैं। सभी का घर वह ब्रह्मलोक है, ब्रह्माण्ड, जहाँ सब आत्मायें रहती हैं।

4] वैष्णव लोग हमेशा कुएं का पानी पीते है। एक तरफ समझते हैं यह पवित्र है, दूसरे तरफ फिर पतित बनने के लिए गंगा स्नान करने जाते हैं। इसे तो अज्ञान ही कहेंगे।

❋ योग-

1] याद का आधार है प्यार, प्यार में कमी है तो याद एकरस नहीं रह सकती और याद एकरस नहीं है तो प्यार नहीं मिल सकता।

2] बाप खास कहते हैं– मीठे-मीठे रूहानी बच्चों, भक्ति मार्ग में देह-अभिमान के कारण तुम सबको याद करते थे, अब मामेकम् याद करो। एक बाप मिला है तो उठते-बैठते बाप को याद करो तो बहुत खुशी होगी। बाप को याद करने से सारे विश्व की बादशाही मिलती है। जितना टाइम कम होता जायेगा इतना जल्दी-जल्दी याद करते रहेंगे। दिन-प्रतिदिन कदम बढ़ाते रहेंगे। आत्मा कभी थकती नहीं है। शरीर से कोई पहाड़ आदि पर चढ़ेंगे तो थक जायेंगे। बाप को याद करने में तुमको कोई थकावट नहीं होगी। खुशी में रहेंगे। बाबा को याद कर आगे चलते जायेंगे।

❋ धारणा-

1] पुरुषार्थ ही नहीं करेंगे तो क्या पद पायेंगे? तुम्हारा पुरूषार्थ चल रहा है। तुम ऐसे बनेंगे। इस विनाश के बाद इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा। यह भी अब मालूम पड़ा है। पावन बनने में ही टाइम लगता है। याद की यात्रा मुख्य है, देखा गया, बहन-भाई समझने से भी बाज़ नहीं आते हैं तो अब फिर कहते हैं भाई-भाई समझो। बहन-भाई समझने से भी दृष्टि नहीं फिरती। भाई-भाई देखने से फिर शरीर ही नहीं रहता। हम सब आत्मायें हैं, शरीर नहीं हैं।

❋ सेवा-

1] ऐसे भी सीधा नहीं कहना है– भगवान आया है। ऐसे भी बहुत कहते हैं– भगवान आ गया है। परन्तु नहीं, ऐसे अपने को भगवान कहलाने वाले तो ढेर आये हैं। यह तो समझाना है बेहद का बाप आकर बेहद का वर्सा दे रहे हैं कल्प पहले मिसल, ड्रामा प्लैन अनुसार।